(c) The management of the companies under the Bird Group was taken over by the Government in view of mis-management and its precarious financial position. It has been the effort of the Government to undertake measures which would improve their via-bility and protect the interest of the workers. Steps taken include providing financial assistance, rehabilitation and modernisation of plant and equipment and marketing tie-up with major consumers. -These measures have helped in halting further decline in financial health of the companies while few are showing signs of revival.

Causes of Rail Accidents

861. SHRIMATI KAMLA SINHA: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) the causes of the increased number of railway accidents in the recent months; and

(b) whether it is a fact that work of a permanent nature has been given to the private contractors, leading to negligence in the maintenance of tracks and in other crucial areas?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI MALLIKARJUN); (a) The marginal increase in train accidents during the first five months of the current financial year, when compared with the corresponding period of last year, is entirely due to sharp increase in accidents at unmanned level crossings caused due to negligence of the road users.

(b) Maintenance' work of permanent nature is not given to private contractors. Regular maintenance of tracks is carried out departmentally.

भारतीय इस्पात प्राधिकरण लिमिटेड की उत्पादन-लागत में वृद्धि

862. श्री रणजीत सिंह :
श्री राम जेठमलानी :

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 28 जुलाई 1991 के "फाइनेन्शियल एक्सप्रेस" में "प्रोडक्शन कास्टपस एक्ट सेल टू गो अप बाइ रूपिज 465 करोड़स" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि सरकार द्वारा हाल ही में लिए गए निर्णयों के कारण इस्पात की उत्पादन-लागत में वृद्धि होगी;

(ग) यदि हां, तो क्या यह सच है कि इस्पात की उत्पादन लागत में इस वृद्धि से पहले भी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय इस्पात की कीमतें विश्व के अन्य देशों के मुकाबले अधिक थीं;

(घ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या उत्पादन लागत में वृद्धि की वसूली उपभोक्ताओं से करने के बजाए सरकार ने इस्पात की उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने अथवा उत्पादन बढ़ाने या प्रशासनिक खर्च को घटाने के लिए कोई प्रयास किए हैं, यदि नहीं, तो इसका क्या कारण है?

इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) (श्री सन्तोष मोहन देव) : (क) और (ख) जी, हां।

(ग) और (घ) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इस्पात की विभिन्न श्रेणियों की कीमतें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार परिस्थितियों पर

निर्भर करती है और इसमें समय-समय पर उतार-चढ़ाव होता रहता है। सेल केवल इस्पात मदों की सीमित मात्रा का ही निर्यात करती है और इनको उस समय अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मौजूदा कीमत पर बेचा जाता है। 1990-91 के दौरान 'सेल' ने 316.5 अमरीकन डालर प्रति टन से लेकर 353 अमरीकन डालर प्रति टन की कीमत (पोत पर्यन्त निशुल्क) पर मृदु इस्पात प्लेटों का निर्यात किया। इसी प्रकार वर्ष 1990-91 के दौरान 1900 अमरीकन डालर से लेकर 2250 अमरीकन डालर पोत पर्यन्त निशुल्क कीमत पर बैंदाग इस्पात चारदरों/कवायलों का निर्यात किया गया।

(ङ) इस्पात संयंत्रों की दक्षता और उत्पादन स्तर में वृद्धि करने के लिए सेल द्वारा सतत् प्रयास किए जा रहे हैं। उठाए जा रहे कदमों में शामिल हैं; संयंत्रों का आधुनिकीकरण और प्रौद्योगिकीय उन्नयन, उन्नत तकनीकी-आर्थिक कार्य जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो, प्रॉडक्ट-मिक्स में विविधिकरण, पुनः प्रशिक्षण और पुनः तनाती सहित श्रमशक्ति का युक्तिकरण तथा अन्य खर्चों सहित ऊर्जा खपत और पेट्रो-इंधन में कमी करना।

सोने का खनन कार्य

863. **श्री रणजीत सिंह :**
डा० जिनेन्द्र कुमार जैन :

क्या खान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश की विभिन्न खानों में सोने का खनन किया जाता है;

(ख) यदि हां, तो किन-किन संस्थाओं के अन्तर्गत और कब से सोने के खनन का काम किया जा रहा है;

(ग) क्या यह भी सच है कि कई वर्षों से इन खानों से स्वर्ण के उत्पादन में निरंतर गिरावट आ रही है;

(घ) यदि हां, तो क्या सरकार ने सोने के खनन की वर्तमान प्रणाली में सुधार लाने तथा इस कमी को पूरा करने के उद्देश्य से सोने की अन्य खानों का पता लगाने के लिए कोई प्रयास किए हैं; और

(ङ) यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है ?

खान मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) (श्री बलराम सिंह यादव) (क) और (ख) देश में स्वर्ण खनन की दो प्रमुख कंपनियां भारत गोल्ड माइन्स लिमिटेड और हट्टी गोल्ड माइन्स कंपनी लिमिटेड हैं, जो क्रमशः 1880 और 1948 से स्वर्ण खनन कर रही हैं

(ग) भारत गोल्ड माइन्स लिमिटेड की कोलार स्वर्ण क्षेत्र की खानों स्वर्ण उत्पादन निरन्तर घ रहा है।

(घ) जी हां।

(ङ) भारत गोल्ड माइन्स लिमिटेड की वर्तमान खानों में आधुनिक खनन विधियां अपनाकर इष्टतम स्तर तक खनन किया जा रहा है। कंपनी कुछ उथले स्वर्ण निक्षेपों का भी गवेषण कर रही है।

देश में स्वर्ण की खोज के लिये भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण द्वारा प्रारंभिक सर्वेक्षण आरंभ किये गये हैं। खनिज गवेषण निगम व्यापक गवेषण करता है तथा निक्षेपों से स्वर्ण खनन की साध्यता की सिफारिश करता है। इन दोनों संगठनों के गवेषण-गत क्षेत्रों का ब्यौरा विवरण में दिया गया है।